Baba’s Praise

14/7/2015

- ईश्वर को देह है नहीं। वह सदैव आत्म-अभिमानी है। वह है सुप्रीम आत्मा, सभी आत्माओं का बाप। परम आत्मा अर्थात् ऊंचे ते ऊंचा। मनुष्य जब ऊंचे ते ऊंचा भगवान कहते हैं तो बुद्धि में आता है वह निराकार लिंग रूप है। निराकार लिंग की पूजा भी होती है। वह है परमात्मा यानी सभी आत्माओं से ऊंच। है वह भी आत्मा परन्तु ऊंच आत्मा। वह जन्म-मरण में नहीं आते हैं। बाकी सब पुनर्जन्म लेते हैं और सभी हैं रचना। रचता तो एक ही बाप है। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर भी रचना है। मनुष्य सृष्टि भी सारी है रचना। रचता को बाप कहा जाता है।

- रचयिता है बेहद का बाप, वही रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं।
- इस समय मनुष्यमात्र सब देह-अभिमानी हैं। बाप आत्म-अभिमानी बनाते हैं। आत्मा क्या चीज़ है, यह भी बाप बतलाते हैं।
- रावण राज्य से लिबरेट कर गाइड बन ले जाते हैं।
- बाप की मत के लिए ही गाया जाता है तुम्हरी गत-मत न्यारी..... इसका भी अर्थ कोई नहीं जानते। बाप समझाते हैं मैं ऐसी श्रेष्ठ मत देता हूँ जो तुम देवता बन जाते हो।

- जानते हो बाबा हमको ऐसा पुरूषोत्तम बनाते हैं। यह सच्ची सत्य नारायण की कथा है। सत्य बाप तुमको नर से नारायण बनने का राजयोग सिखला रहे हैं। ज्ञान सिर्फ एक बाप के पास है, जिसको ज्ञान का सागर कहा जाता है। शान्ति का सागर, पवित्रता का सागर, यह उस एक की ही महिमा है। **दूसरे कोई की महिमा हो नहीं सकती।**